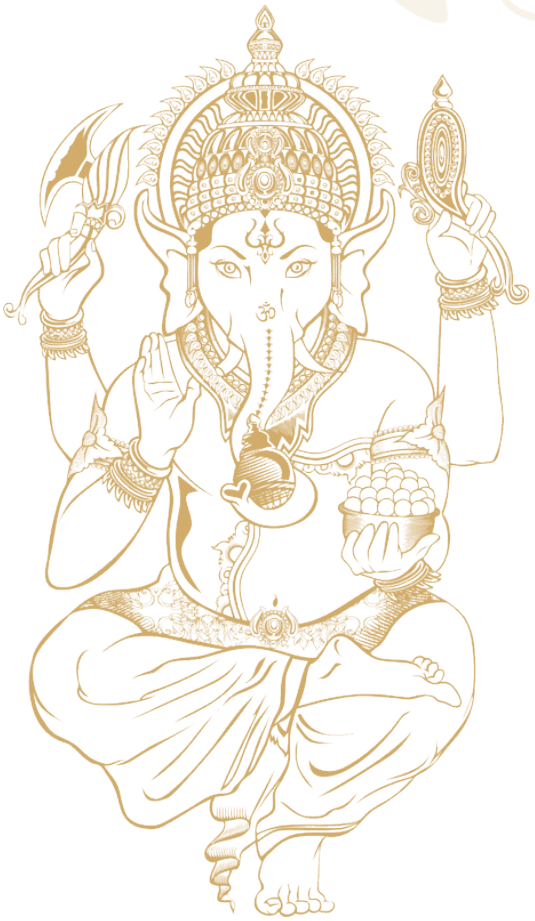

Mr. Mohit

Ms. Prerna

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120268202

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/02/1991	जन्म तिथि	28-01/03/1993
शुक्रवार	दिन	रवि-सोमवार
घंटे 16:05:00	जन्म समय	01:45:00 घंटे
घटी 22:10:53	जन्म समय(घटी)	47:16:54 घटी
India	देश	India
Rohtak	स्थान	Delhi
28:54:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
76:38:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:28	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:12:38	सूर्योदय	06:47:44
18:00:49	सूर्यास्त	18:20:03
23:44:14	चित्रपक्षीय अयनांश	23:45:59

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 14वर्ष 0मा 21दि		24:18:54	मिथु	लग्न	वृश्चि	23:38:33	सूर्य 1वर्ष 4मा 13दि	
मंगल		18:19:24	मक	सूर्य	कुंभ	16:29:39	राहु	
22/02/2021		17:17:42	सिंह	चंद्र	वृष	06:57:27	14/07/2011	
22/02/2028		09:17:33	वृष	मंगल	मिथु	15:58:53	13/07/2029	
मंगल	21/07/2021	29:33:16	धनु	बुध व	मीन	00:23:10	राहु	26/03/2014
राहु	08/08/2022	14:23:31	कर्क व	गुरु व	कन्या	19:28:01	गुरु	19/08/2016
गुरु	15/07/2023	10:18:14	कुंभ	शुक्र	मीन	24:08:50	शनि	26/06/2019
शनि	23/08/2024	05:38:29	मक	शनि	मक	29:27:15	बुध	12/01/2022
बुध	20/08/2025	04:16:10	मक व	राहु व	वृश्चि	23:33:28	केतु	31/01/2023
केतु	16/01/2026	04:16:10	कर्क व	केतु व	वृष	23:33:28	शुक्र	30/01/2026
शुक्र	19/03/2027	17:48:39	धनु	हर्ष	धनु	27:07:32	सूर्य	25/12/2026
सूर्य	24/07/2027	21:32:33	धनु	नेप	धनु	26:37:59	चन्द्र	25/06/2028
चन्द्र	22/02/2028	26:30:46	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	01:45:18	मंगल	13/07/2029

लग्न-चलित

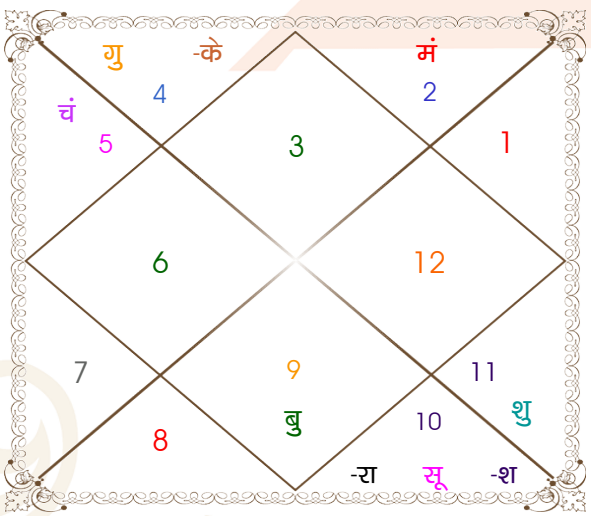

लग्न-चलित

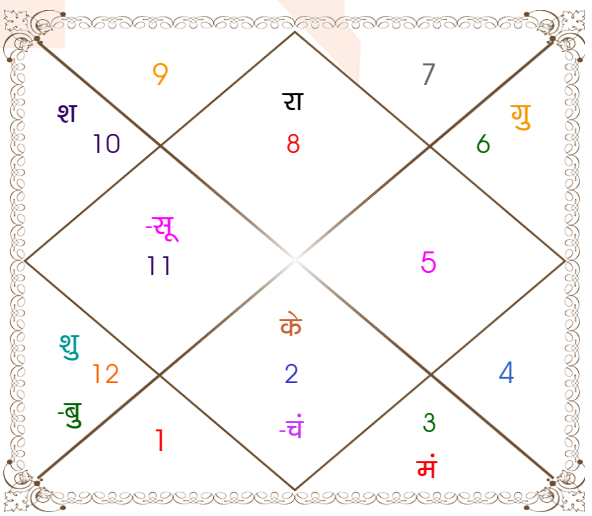

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	चतुष्पाद	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मूषक	मेष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शुक्र	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	सिंह	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

डतण् डवीपज का वर्ग श्वान है तथा डेण् च्तमतदं का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् डवीपज और डेण् च्तमतदं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण् डवीपज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण् डवीपज कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण् च्तमतदं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण् च्तमतदं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण् डवीपज कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डतण् डवीपज कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् डवीपज तथा डेण् च्तमतदं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।